Nazar Ki Hifazat Ki Fazilat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 281
Weekly Booklet : 281

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

नज़र की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत

सफ़हात 21

इधर उधर देखने का भी हिसाब होगा 02

निगाहे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाएं 06

रास्ते की तक्लीफ़ देह चीज़ों की निशान देही 11

ग़ैर औरत से हाथ मिलाने का अ़ज़ाब 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **नज़र की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत**
सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1444** हि., दिसम्बर **2022** ई.
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नज़र की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत

येह रिसाला (**नज़र की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E Mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 314 ता 332 से लिया गया है।

नज़र की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत

दुआए अ़त्तार **या रब्बल मुस्त़फ़ा** ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : **"नज़र की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत"** पढ़ या सुन ले उसे तमाम गुनाहों से बचा कर मुसल्मानों की ह़क़ तल्फ़ियों से बचा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

पढ़ते रहो दुरूदो सलाम भाइयो ! मुदाम फ़ज़्ले ख़ुदा से दोनो जहां के बनेंगे काम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रास्तों में बैठने के हुक़ूक़

"बुख़ारी शरीफ़" में है, ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सह़ाबए किराम से) इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग रास्तों में बैठने से बचो ! **सह़ाबए किराम**

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम इन मजलिसों में बैठ कर (ज़रूरी) गुफ़्तगू करते हैं और येह हमारे लिये ज़रूरी हैं। फ़रमाया : जब तुम मजालिस में आया करो तो रास्ते को इस का ह़क़ दो। अ़र्ज़ की गई : रास्ते का ह़क़ क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ निगाहें नीची रखना ﴾2﴿ तक्लीफ़ देह शै दूर करना ﴾3﴿ सलाम का जवाब देना ﴾4﴿ **नेकी का हुक्म** देना और बुराई से मन्अ़ करना।

(بخاری،4/165،حدیث:6229)

इधर उधर देखने का भी क़ियामत में ह़िसाब होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में रास्ते के "चार हुक़ूक़" बयान किये गए हैं : **रास्ते का ह़क़** ﴾1﴿ **निगाहें नीची रखना :** वाक़ेई इस की बेह़द अहम्मिय्यत है। लिहाज़ा हुसूले सवाबे आख़िरत की निय्यत से आंखों के मुतअ़ल्लिक़ "**नेकी की दा'वत**" पेश करता हूं। **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आंख को हर फ़ुज़ूल बात (या'नी जिस की ज़रूरत न हो उस) से बचाए, क्यूं कि **अल्लाह** पाक जिस त़रह़ "फ़ुज़ूल गुफ़्तगू" के बारे में पूछेगा इसी त़रह़ बरोज़े क़ियामत बन्दे से "फ़ुज़ूल नज़र" (मसलन बिला ज़रूरत इधर उधर देखने) के बारे में भी सुवाल करेगा। (احیاءالعلوم،5/126) अज्नबिय्या (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो उस) को देखने से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : "اَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَان" या'नी आंखें ज़िना करती हैं। (مسند امام احمد،3/305،حدیث:8852) अगर राह में निगाहें चारों त़रफ़ दौड़ाते रहें तो बद निगाही से बचना बेह़द दुश्वार हो जाता है, ख़ुदा की क़सम **बद निगाही का अ़ज़ाब** बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

निगाहों की हिफ़ाज़त का कुरआनी हुक्म

दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** (397 सफ़हात) से बा'ज़ मुनदरजात मुलाहज़ा हों : **अल्लाह** पाक मर्दों को निगाहों की हिफ़ाज़त की ताकीद करते हुए पारह 18 **सूरतुन्नूर** की आयत नम्बर 30 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ

(پ18، النور:30)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें ।

औरतों के लिये इर्शादे कुरआनी है :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ

(پ18، النور:31)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसल्मान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें ।

आंखों में आग भर दी जाएगी

ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की **आंखों में आग भर दी जाएगी ।**

(مکاشفۃ القلوب، ص10)

आग की सलाई

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : औरत के मह़ासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़ह़र में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना मह़रम से आंख की हिफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फेरी जाएगी ।

(بحر الدموع، ص171)

"ज़ैनब" के चार हुरूफ़ की निस्बत से नज़र के बारे में 4 अहादीसे मुबारका

﴾1﴿ हज़रते जरीर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे दो आलम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अचानक **नज़र** पड़ जाने के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया : तो इर्शाद फ़रमाया : अपनी निगाह फेर लो। (مسلم، ص1190، حدیث:2159)

जान बूझ कर नज़र मत डालो

﴾2﴿ सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : एक नज़र के बा'द दूसरी नज़र न करो (या'नी अगर अचानक बिला क़स्द किसी औ़रत पर नज़र पड़ी तो फ़ौरन नज़र हटा ले और दोबारा नज़र न करे) कि पहली **नज़र** जाइज़ है और दूसरी **नज़र** जाइज़ नहीं। (ابوداود، 2/358، حدیث:2149)

नज़र की हिफ़ाज़त की फ़ज़ीलत

﴾3﴿ ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो मुसल्मान किसी औ़रत की ख़ूबियों की त़रफ़ पहली बार नज़र करे (या'नी बे ख़याली में नज़र पड़ जाए) फिर अपनी आंख नीची कर ले **अल्लाह** पाक उसे ऐसी इबादत अ़त़ा फ़रमाएगा जिस की वोह लज़्ज़त पाएगा।

(مسند امام احمد، 8/299، حدیث:22341)

इब्लीस का ज़हरीला तीर

﴾4﴿ **अल्लाह** के महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि हदीसे क़ुदसी (या'नी फ़रमाने ख़ुदाए रह़मान) है : **नज़र** इब्लीस के तीरों में से एक

ज़हर में बुझा हुवा तीर है पस जो शख़्स मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क कर दे तो मैं उसे ऐसा **ईमान** अ़ता करूंगा जिस की ह़लावत (या'नी मिठास) वोह अपने दिल में पाएगा। (معجم کبیر، 10/173، حدیث:10362)

औ़रत की चादर भी मत देखो

ह़ज़रते अ़ला बिन ज़ियाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अपनी नज़र को औ़रत की चादर पर भी न डालो क्यूं कि **नज़र** दिल में शह्वत पैदा करती है। (حلیۃ الاولیاء، 2/277)

गुफ़्तगू में निगाह कहां हो ?

सुवाल : क्या गुफ़्तगू करते हुए नज़र नीची रखनी ज़रूरी है ?

जवाब : इस की सूरतें हैं मसलन मर्द का मुख़ातब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह) **अम्रद** हो और उस को देखने से शह्वत आती हो (या इजाज़ते शर्ई से मर्द किसी अज्नबिय्या से या औ़रत किसी अजनबी मर्द से बात कर रही हो) तो नज़र इस त़रह़ नीची रख कर गुफ़्तगू करे कि उस के चेहरे बल्कि बदन के किसी उ़ज़्व ह़त्ता कि लिबास पर भी न पड़े। अगर कोई मानेए शर्ई (या'नी शर्ई रुकावट) न हो तो मुख़ातब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उस) के चेहरे की त़रफ़ देख कर भी गुफ़्तगू करने में शर्अ़न कोई ह़रज नहीं। अगर निगाहों की हिफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से हर एक से नीची नज़र किये बात करने का मा'मूल बनाए तो बहुत ही अच्छी बात है क्यूं कि मुशाहदा येही है कि फ़ी ज़माना जिस की नीची निगाहें रख कर गुफ़्तगू करने की आ़दत नहीं होती उसे जब अम्रद या अज्नबिय्या से बात करने की नौबत आती है उस वक़्त नीची निगाहें रखना उस के लिये सख़्त दुश्वार होता है।

निगाहे मुस्त़फ़ा की अदाएं

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़र फ़रमाने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ बता दीजिये ।

जवाब : ﴾1﴿ किसी के चेहरे पर नज़रें न गाड़ते थे ﴾2﴿ किसी चीज़ की त़रफ़ न देखने की ह़ालत में निगाहें नीची रखते ﴾3﴿ आप की नज़रें आस्मान की निस्बत ज़मीन की त़रफ़ अक्सर रहती थीं । मुराद येह है कि अक्सर ख़ामोशी के वक़्त मुबारक निगाहें झुकी होतीं ﴾4﴿ अक्सर गोशए चश्म (या'नी आंखों के वोह कनारे जो कनपट्टी से मिले होते हैं) से देखते । मत़लब येह है कि ह़द दरजा शर्मो ह़या की वजह से पूरी आंख भर कर न देखते थे । ﴾5﴿ जब किसी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे मुतवज्जेह होते, या'नी नज़र चुराते नहीं थे और बा'ज़ ने येह फ़रमाया कि सिर्फ़ गरदन फेर कर किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह न होते बल्कि पूरे बदन मुबारक से फिर कर मुतवज्जेह होते । (جمع الوسائل فی شرح الشمائل للقاری، ص52-53۔احیاء العلوم، 2/442)

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया उस निगाहे इ़नायत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 300)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम दुन्या व आख़िरत में जिस त़रफ़ उठी मुर्दा जिस्मों में जान और रूह़ों में ताज़गी आ गई, हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मतों और इ़नायतों भरी पाकीज़ा नज़र पर लाखों सलाम हों । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के शे'र पर ह़ज़रत मौलाना अख़्तरुल ह़ामिदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने क्या ख़ूब तज़्मीन बांधी है :

पड़ गई जिस पे महशर में बख़्शा गया देखा जिस सम्त अब्रे करम छा गया

रुख़ जिधर हो गया ज़िन्दगी पा गया जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया

उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पिघला हुवा सीसा आंखों में डाला जाएगा

मन्क़ूल है : "जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।" (ہدایہ، 2/368) यक़ीनन भाभी भी अज्नबिय्या ही है। जो देवर व जेठ अपनी भाभी को क़स्दन देखते रहे हों, बे तकल्लुफ़ बने रहे हों, मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हों, वोह **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब से डर कर फ़ौरन से पेशतर सच्ची तौबा कर लें। भाभी अगर देवर को छोटा भाई और जेठ को बड़ा भाई कह दे इस से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी जाइज़ नहीं हो जाती और देवर व भाभी बद निगाही, आपसी बे तकल्लुफ़ी व हंसी मज़ाक़ वग़ैरा गुनाहों की दलदल में मज़ीद धंसते चले जाते हैं। याद रखिये ! जेठ और देवर व भाभी का आपस में बिला ज़रूरत व बे तकल्लुफ़ी से गुफ़्तगू करना भी मुसल्सल ख़तरे की घन्टी बजाता रहता है ! भलाई इसी में है कि न एक दूसरे को देखें और न ही आपस में बिला ज़रूरत और बे तकल्लुफ़ी से बातचीत करें।

देखना है तो मदीना देखिये क़स्रे शाही का नज़ारा कुछ नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मैं T.B. का मरीज़ था

शर्मो हया का जज़्बा पाने, बद निगाही की आफ़तों से ख़ुद को

डराने, निगाहों की हिफ़ाज़त की तड़प बढ़ाने, बात करते हुए नीची निगाहें रखने की आ़दत बनाने की ख़ातिर आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और अपने इस दीनी मक़्सद : **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है''** के हुसूल की ख़ातिर अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये फ़िक्र मन्द रहिये, **नमाज़ों** की पाबन्दी जारी रखिये, **सुन्नतों** पर अ़मल करते रहिये, नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना अपना ''जाएज़ा'' ले कर नेक आ'माल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **मदनी बहार** सुनाऊं, एक इस्लामी भाई ता दमे तह़रीर तक़रीबन 12 साल से आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हैं। उन की वाबस्तगी का सबब तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी है। इज्तिमाअ़ के तक़रीबन साढ़े सात माह बा'द वोह सख़्त बीमार हो गए, डॉक्टरों ने उन के मरज़ को T.B. क़रार दिया। बीमारी भुगतते हुए लगभग साढ़े चार माह गुज़र गए और एक बार फिर तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का मौसिमे बहार आ पहुंचा। वोह जाने के लिये बे क़रार हुवे मगर घर वाले मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुए। उन्हों ने अम्मीजान का ज़ेह्न बनाया कि वहां कसीर ता'दाद में **आ़शिक़ाने रसूल** तशरीफ़ लाते हैं, मुझे

जाने दीजिये, नेक बन्दों की सोहबत और वहां होने वाली **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ** की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه मैं सिह्हत की ने'मत ले कर पलटूंगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه इजाज़त मिल गई। दवाएं वग़ैरा साथ ले कर **इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा। इख़्तिामी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ** ख़त्म होने वाली थी। दिल में ह़सरत पैदा हुई दुआएं तो बहुत हुईं मगर उन के मरज़ T.B. के लिये सराह़तन (या'नी साफ़ साफ़ अल्फ़ाज़ में) दुआ नहीं मांगी गई, काश! T.B. के मरीज़ों के लिये भी दुआ हो जाती। अभी येह बात ज़ेह्न में आई थी कि कमाल हो गया! दुआ करवाने वाले की कुछ इस त़रह़ आवाज़ माइक पर गूंज उठी : **या अल्लाह**! जो कैन्सर के मरीज़ हैं, जो T.B. के मरीज़ हैं उन को भी शिफ़ाए कामिला अ़त़ा फ़रमा। दुआ में दो एक और बीमारियों के भी नाम लिये गए जो वोह भूल गए। ख़ैर T.B. से शिफ़ा की दुआ सुनते ही उन के दिल ने गोया पुकार कर कहा : "बस अब तू ठीक हो गया।" इज्तिमाअ़ से वापसी के दूसरे ही दिन "चेकअप" करवाने के लिये गए, एक्सरे वग़ैरा करवाए, X.RAY देख कर स्पेशलिस्ट डॉक्टर ह़ैरत ज़दा हो गया और कहने लगा : मुबारक हो आप की T.B. ख़त्म हो चुकी है!

अगर्चे हो टीबी न घबराओ फिर भी शिफ़ा ह़क़ से दिलवाएगा मदनी माह़ोल
तुम्हें सिह्हतो आ़फ़िय्यत होगी ह़ासिल तुम अपना के देखो ज़रा मदनी माह़ोल

बीमारी की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने! **अल्लाह** पाक की रह़मत से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई की T.B. की बीमारी जाती रही। हम **अल्लाह** पाक से इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल

करने के लिये सिह्हत के त़लबगार हैं, ताहम अगर कोई बीमारी हो भी जाए तो हिम्मत न हारिये, सब्र करते हुए बीमारी पर मिलने वाले सवाबे आख़िरत पर नज़र रखिये चुनान्चे ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब मुसल्मान किसी जिस्मानी बीमारी में मुब्तला होता है तो फ़िरिश्ते को हुक्म होता है : "तू इस की वोही नेकियां लिख जो येह पहले किया करता था।" अगर उसे शिफ़ा देता है तो धो देता और पाक कर देता है और अगर उसे मौत देता है तो बख़्श देता है और रह़्म फ़रमाता है। (شرح السنہ، 3/187، حدیث:1424)

आरिज़ी आफ़ते दुन्या से तो दिल डरता है हाए बे ख़ौफ़ अ़ज़ाबों से हुवा जाता है
येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं भाई ! क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रास्ते का ह़क़ नम्बर (2) तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना

कांटेदार शाख़ हटाने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 02 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक "रास्तों में बैठने के हुक़ूक़" में मज़्कूरा ह़क़ नम्बर ﴿1﴾ "निगाहें नीची रखना" के मुतअ़ल्लिक़ "नेकी की दा'वत" के ढेरों मदनी फूल ह़ाज़िर किये गए, अब उसी रिवायत में बयान कर्दा **रास्ते का ह़क़ नम्बर ﴿2﴾ "तक्लीफ़ देह शै दूर करना"** के ज़िम्न में नेकी की दा'वत के कुछ मदनी फूल पेश किये जाते हैं, समाअ़त फ़रमाइये : यक़ीनन मुसल्मानों की

राहों से तक्लीफ़ देह चीज़ें दूर करने की बड़ी फ़ज़ीलत है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़हा 623 पर **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था, उस ने उस रास्ते पर एक कांटेदार शाख़ पाई तो उसे रास्ते से हटा दिया, **अल्लाह** पाक को उस शख़्स का येह अ़मल पसन्द आया और उस बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" (مسلم،ص1060،حدیث:1914)

तू ने जब से सुना दिया या रब سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ عَلٰی غَضَبِیْ[1]
और मज़बूत़ हो गया या रब *आसरा हम गुनाहगारों का*

(ज़ौक़े ना'त)

रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटाने का सवाब

हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से रिवायत है : जिस ने मुसल्मानों के रास्ते से ईज़ा पहुंचाने वाली चीज़ हटा दी उस के लिये एक **नेकी** लिखी जाएगी और जिस के लिये **अल्लाह** पाक के पास एक नेकी लिखी जाए तो **अल्लाह** पाक उस नेकी के सबब उसे **जन्नत** में दाख़िल फ़रमा देगा।

(معجم اوسط،1/19،رقم:32)

रास्ते की तक्लीफ़ देह चीज़ों की निशान देही

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की राह में ऐसा रोड़ा, पथ्थर वग़ैरा हो जिस से ठोकर लग सकती हो या टूटे हुए कांच पड़े हों जिस से किसी का पांव ज़ख़्मी हो सकता हो, या सड़क पर केले, पपीते या आम वग़ैरा के छिलके किसी ने फेंके हों जिस से आदमी फिसल कर गिर सकता हो येह और इसी त़रह़ की ऐसी चीज़ें रिज़ाए इलाही की निय्यत से हटा देना

1... या'नी मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब से बढ़ कर है।

कारे सवाब है। इसी त़रह़ सरे राह गढ़ा हो या **गटर** का ढक्कन खुला हो तो मुम्किना सूरत में उस का भी मुनासिब बन्दो बस्त कर देना चाहिये। खुले गटर तो इस क़दर ख़त़रनाक होते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बच्चे वग़ैरा इस में गिर कर मर जाते हैं, जहां लोहे के ढक्कन चोरी होने का ख़त़रा हो वहां सिमेन्ट के ढक्कन लगाना मुनासिब है। हर शख़्स को चाहिये कि जो चीज़ें दूसरों के लिये तक्लीफ़ देह हों मसलन छिलके, गन्दगी वग़ैरा रास्ते में न फेंके। अगर अपने घर का गटर भर गया, गन्दा पानी गली में आ गया, या गन्दे पानी का बाहरी पाइप टूट गया, इस त़रह़ के मसाइल फ़ौरन ह़ल कर लेने चाहिएं, नीज़ कपड़े वग़ैरा भी धो कर घरों के बर आमदे में इस त़रह़ न सुखाए जाएं कि राहगीरों पर पानी टपके। किसी के घर के आगे इस त़रह़ कचरा डालना कि उसे तक्लीफ़ पहुंचे येह गुनाह है। हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ करना मसलन मह़फ़िले ना'त, चौक इज्तिमाअ़ या किसी त़रह़ की दीनी या दुन्यवी तक़रीब के लिये आ़म गुज़र गाहों का रास्ता बन्द कर देना ना जाइज़ व गुनाह है। इसी त़रह़ चीज़ें बेचने के लिये ठेला या बस्ता (STALL) लगा कर या क़स्दन गाड़ी पार्क कर के किसी के घर, दुकान या राहगीरों का रास्ता तंग कर देना भी शर्अ़न जाइज़ नहीं। हां किसी नमाज़ में मस्जिद भर गई और बाहर सफ़ें बना दी गईं या जनाज़े के जुलूस कज्ह से रास्ता घिर गया येह गुनाह नहीं। इसी त़रह़ ह़ाजियों की रुख़्सत व इस्तिक़्बाल के जुलूस और जुलूसे मीलाद में भी ह़रज नहीं।

मुसल्मां की राह़त का सामान कीजे यूं ख़ुद पर रहे ख़ुल्द आसान कीजे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रास्ते का हक़ नम्बर (3) ''सलाम का जवाब देना''

100 में से 90 रह़मतें उसे मिलती हैं जो.....

इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 02 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक ''रास्तों में बैठने के हुक़ूक़'' में रास्ते का ह़क़ नम्बर ﴿3﴾ **''सलाम का जवाब देना''** के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल मदनी फूल क़बूल फ़रमाइये : जब कोई मुसल्मान सलाम करे तो उस का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले । सलाम व मुलाक़ात की बड़ी फ़ज़ीलत है । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हैं और उन में से एक अपने साथी को सलाम करता है तो उन में से **अल्लाह** पाक के नज़्दीक ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) वोह होता है जो अपने साथी से ज़ियादा गर्म जोशी से मुलाक़ात करता है, फिर जब वोह मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं तो उन पर सो रह़मतें नाज़िल होती हैं उन में से नव्वे (90) रह़मतें (सलाम में) पहल करने वाले के लिये और दस मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) में पहल करने वाले के लिये हैं। (مسند بزار، 1 437، حدیث:308) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसल्मान मुलाक़ात के वक़्त आपस में मुसाफ़ह़ा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत हो जाती है । (ترمذی، 4/333، حدیث:2736)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ ''जब दो मुसल्मान मुलाक़ात के वक़्त आपस में मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं'' के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी मर्द मर्द से या औ़रत औ़रत से (हाथ मिलाते हैं) । (فیض القدیر شرح الجامع الصغیر، 5/637، تحت الحدیث:8109)

तेरी रह़मतों पे मैं क़ुरबान या रब मेरे बाल बच्चे मेरी जान या रब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर मुसल्मान को उ़मूमन सलाम व जवाबे सलाम और मुसाफ़हा करने या'नी हाथ मिलाने की सआ़दत मिलती रहती है। आइये ! "नेकी की दा'वत" का मज़ीद सवाब लूटने के लिये इस बारे में दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, "101 मदनी फूल" से कुछ महके महके मदनी फूल चुनने का शरफ़ ह़ासिल करते हैं : पेश कर्दा हर मदनी फूल को सुन्नते रसूले मक़्बूल पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा हो सकता है बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ عَلَيْهِم से मन्क़ूल **मदनी फूल** का भी शुमूल हो। जब तक यक़ीनी तौ़र पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "सुन्नते रसूल" नहीं कह सकते।

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से सलाम के 11 मदनी फूल

﴾1﴿ मुसल्मान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे **सलाम** करना सुन्नत है। (इस्लामी बहनें भी इस्लामी बहनों नीज़ मह़ारिम को सलाम करें) ﴾2﴿ **मक्तबतुल मदीना** की किताब बहारे शरीअ़त (1332 सफ़ह़ात) (जिल्द 3) सफ़ह़ा 459 पर लिखे हुए जुज़्इय्ये का ख़ुलासा है : "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह **निय्यत** हो कि जिस को **सलाम** करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी हिफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं" ﴾3﴿ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसल्मानों को सलाम करना कारे सवाब है ﴾4﴿ सलाम में पहल करना सुन्नत है ﴾5﴿ सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** पाक का मुक़र्रब

(या'नी नज़्दीकी पाने वाला बन्दा) है ﴾6﴿ सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी (या'नी आज़ाद) है। जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है। (شعب الایمان، 6/433، حدیث:8786) ﴾7﴿ **सलाम** (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं। (کیمیائے سعادت، 1/394) ﴾8﴿ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ (या'नी तुम पर सलामती हो) कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَةُ اللّٰهِ (और अल्लाह की रह़मत हो) भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَكَاتُه (और उस की बरकतें हों) शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। बा'ज़ लोग सलाम के साथ "जन्नतुल मक़ाम और दोज़ख़ुल ह़राम" के अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है। बल्कि बा'ज़ मन चले तो مَعَاذَاللّٰه यहां तक बक जाते हैं : "आप के बच्चे हमारे ग़ुलाम।" मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 409 पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ और इस से बेहतर وَرَحْمَةُ اللّٰهِ मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَكَاتُه शामिल करना और इस पर ज़ियादत (या'नी ज़ियादा) नहीं। उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहे। और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه कहे और अगर उस ने وَبَرَكَاتُه तक कहा तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ﴾9﴿ इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं ﴾10﴿ सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले

﴾11﴿ सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये। पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ (اَس۔ سَلا۔ مُ۔ عَلَے۔ کُمْ) अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये : وَعَلَيْكُمُ السَّلَام (وَ۔ عَ۔ لَيک۔ مُسْ۔ سَلام) ।

रिज़ाए हक़ के लिये तुम सलाम आम करो सलामती के तलब गार हो सलाम करो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

''हाथ मिलाना सुन्नत है'' के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने के 14 मदनी फूल

﴾1﴿ दो मुसल्मानों का ब वक़्ते मुलाक़ात दोनों हाथों से मुसाफ़हा करना या'नी दोनों **हाथ मिलाना** सुन्नत है ﴾2﴿ हाथ मिलाने से पहले **सलाम** कीजिये ﴾3﴿ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और (साथ में) हाथ भी मिला सकते हैं ﴾4﴿ नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : ''जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए मुसाफ़हा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** पाक उन के दरमियान सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निन्नानवे रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।'' (معجم اوسط، 5/380، حدیث: 7672) ﴾5﴿ हाथ मिलाने के दौरान दुरूद शरीफ़ पढ़िये हाथ जुदा होने से पहले اِنْ شَآءَ اللّٰه अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ﴾6﴿ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ भी पढ़ लीजिये : ''يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ'' (या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ﴾7﴿ दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ मांगेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه **क़बूल** होगी और हाथ जुदा

होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم ﴿8﴾ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ﴿9﴾ मुसल्मान को **सलाम** करने, **हाथ मिलाने** बल्कि महब्बत के साथ उस का **दीदार** करने से भी सवाब मिलता है। ह़दीसे पाक में है : जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ महब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (معجم اوسط،6/131،حدیث:8251) ﴿10﴾ जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴿11﴾ आज कल बा'ज़ लोग दोनों त़रफ़ से एक हाथ मिलाते बल्कि सिर्फ़ उंग्लियां ही आपस में टकरा देते हैं येह सब ख़िलाफ़े सुन्नत है ﴿12﴾ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ चूम लेना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त 3 /472) (हाथ मिलाने के बा'द अपनी हथेली चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें) हां अगर किसी बुज़ुर्ग से हाथ मिलाने के बा'द हुसूले बरकत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो कराहत नहीं, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर किसी से मुसाफ़ह़ा किया फिर बरकत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो मुमानअ़त की कोई वज्ह नहीं जब कि जिस से हाथ मिलाए वोह उन हस्तियों में से हो जिन से बरकत ह़ासिल की जाती हो। (جد الممتار، مقولہ:4551، غیر مطبوعہ) ﴿13﴾ अगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से (या किसी भी मर्द से) हाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है (در مختار،2/98) ﴿14﴾ मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये। (बहारे शरीअ़त, 3 /471)

ग़ैर औ़रत से हाथ मिलाने का अ़ज़ाब

एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है : जिस ने किसी अज्नबिय्या (या'नी ऐसी औ़रत जिस से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम न हो) औ़रत से मुसाफ़ह़ा किया (या'नी हाथ मिलाया) तो वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ आग की ज़न्जीर से गरदन के साथ बंधा हुवा होगा। (قرۃ العیون، ص389) **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''बहारे शरीअ़त''** (जिल्द 3) सफ़ह़ा 446 पर है : (अज्नबिय्या) से मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) जाइज़ नहीं इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब वक़्ते बैअ़त भी औ़रतों से मुसाफ़ह़ा न फ़रमाते सिर्फ़ ज़बान से बैअ़त लेते। हां अगर वोह बहुत ज़ियादा बूढ़ी हो कि मह़ल्ले शह्वत न हो तो उस से मुसाफ़ह़ा में ह़रज नहीं। यूहीं अगर मर्द बहुत ज़ियादा बूढ़ा हो कि फ़ितने का अन्देशा ही न हो तो मुसाफ़ह़ा कर सकता है।

(बहारे शरीअ़त, 3/446)

ज़नाने ग़ैर से भाई मुसाफ़ह़ा मत कर हुवा है जुर्म येह गर कर ले तौबा ह़क़ से डर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रास्ते का ह़क़ नम्बर (4) नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना

इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 02 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक ''रास्तों में बैठने के हुक़ूक़'' में से रास्ते का ह़क़ नम्बर ﴿4﴾ **''नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना''** के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत के मदनी फूल ह़ाज़िर हैं : नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के सवाब की तो कोई इन्तिहा नहीं, रास्ते में अक्सर इस का बहुत मौक़अ़ मिलता है। मसलन आप बैठे थे, कोई मुलाक़ात के लिये

आया बिग़ैर सलाम किये हाथ मिलाने लगा तो उस को इस त़रह़ नेकी की दा'वत दी जा सकती है कि भाईजान ! मुलाक़ात के लिये आने वाले के लिये हाथ मिलाने से क़ब्ल सलाम करना सुन्नत है । बा'ज़ लोग सलाम करते वक़्त झुक जाते हैं उन को भी मौक़अ़ की मुनासबत से और उन के ज़र्फ़ (या'नी ह़ौसले) के मुत़ाबिक़ समझाया जा सकता है, मसलन उन से कहा जाए : दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, ''बहारे शरीअ़त'' (जिल्द 3) सफ़ह़ा 464 पर मस्अला नम्बर 31 है : ''बा'ज़ लोग सलाम करते वक़्त झुक भी जाते हैं, येह झुकना अगर ह़द्दे रुकूअ़ तक हो तो ह़राम है और इस से कम हो तो मक्रूह है ।'' (बहारे शरीअ़त, 3/464) हां दस्त बोसी के लिये झुकने में ह़रज नहीं बल्कि बिग़ैर झुके हाथ चूमना ही दुश्वार है । इस की नेकी की दा'वत का अह़्सन त़रीक़ा येह हो सकता है कि आप के पास ''मदनी बेग'' और उस में मक्तबतुल मदीना के दीगर रिसालों के साथ साथ 101 मदनी फूल नामी चन्द रसाइल भी मौजूद हों और आप उसी रिसाले में से निकाल कर येह ''मदनी फूल'' दिखा दें । ज़ह़े नसीब ! दिखाने के बा'द अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वोह रिसाला ही उस मुलाक़ाती को तोह़फ़े में पेश कर दें । जी हां ! **अच्छी अच्छी निय्यतें** तो हर काम से क़ब्ल करनी ही होंगी अगर एक भी अच्छी निय्यत न हुई तो सवाब नहीं मिलेगा । मसलन रिसाला देते वक़्त येही **निय्यत** कर लीजिये कि ''रिज़ाए इलाही के लिये तोह़फ़ा पेश कर के एक मुसल्मान का दिल ख़ुश कर रहा हूं'' अगर बिग़ैर अच्छी निय्यत के नेकी की दा'वत देंगे, ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करेंगे, सुन्नतें बताएंगे, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की दा'वत देंगे, नेक आ'माल की तरग़ीब दिलाएंगे **सवाब** नहीं मिलेगा ।

अगले हफ़्ते का रिसाला